"अखण्ड वाणी"

—नलिनी (बबली) फर्रुखाबाद

जब भी मैं पढ़ती हूँ वाणी— दुनियां कह जाती है पागल मुझे—
पूंछती है क्या है इन चौपाइयों में— क्यों पढ़ती है तू इसे इतनी लगन से—
प्यार है मुझे चौपाइयों से— क्या कीमत है इन शब्दों की—
बता ना सकती है जुबां मेरी ये— नूर है इन शब्दों में—
निसबत है मेरी इन शब्दों से— प्यार है इसमें मेरे साहिब का—
पढ़ती हूँ तो दिल रोता है— क्या पुकार है उसकी इन शब्दों में—
लगती है मेरे सीने में— आ चुका है 'खुदा' इस जिमीं में—
ऐसा जाना है मैंने चौपाइयों से— छिपकर बैठा है वजूद के अन्दर—
आड़ है वजूद इस जमाने के लिए— दुनियां के लिए बेकार है हम—
अपने पिया के प्राण हैं हम— रहते हैं अपनी मस्ती में—
कोई कुछ भी कहे-कुछ भी कहे— प्रणाम करती हूँ सब सुन्दर साथ को—
नाता है जिनसे जन्म जन्म का— आना 'इन्चोली' मिलेंगे सब—
'वाणी' पढ़ेंगे मिलजुल के—